उद्‌देश्य

1. आचार्य को भारतीय जीवन रचना, संस्कृति तथा शिक्षा के उद्देश्य से परिचत कराना।
2. उसमें आत्म विश्वास एवं गौरव के भाव का सुदृढ़ीकरण।
3. आचार्य का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक तथा वैचारिक ज्ञान विकसित कराना।
4. बाल विकास के प्रमुख नियमों तथा सीखाने के सिद्धान्तों से परिचित कराना।
5. विद्या भारती के विद्यालयों के वैशिष्टय से परिचित कराना।
6. कक्षा में पढ़ाए जाने वाले विषयों एवं उनकी शिक्षण विधियों का समुचित ज्ञान।
7. आचार्य में सामाजिक दायित्व व राष्ट्रीय कर्तव्य का बोध।
8. पाठ्योत्तर क्रियाकलापों की व्यवस्था व संचालन से अवगत कराना।
9. पूर्व प्राथमिक कक्षाओं की विशेषता, साधनों एवं निर्माण की विधियों से परिचय।
10. अभिभावक सम्पर्क एवं प्रशिक्षण के गुणों को विकसित कराना।

दिनचर्या

1.	प्रातः	5:00 बजे	जागरण एवं नित्य कर्म
2.		5:30	चाय
3.		6:00 से 7.30	योगासन, प्राणायाम, ध्यान, प्रातः स्मरण, एकात्मता स्तोत्र, एवं मंत्र
4.		7:30 बजे	अल्पाहार
5.		8:15 से 9.30	प्रथम सत्र (वन्दना अभ्यास, वन्दना इसी में)
6.		9:45 से 10.30	द्वितीय सत्र
7.		10:45 से 11.30	तृतीय सत्र
8.	दोपहर	11:45 से 12.30	चतुर्थ सत्र
9.		12:30 से 1:15	स्नानादि
10.		1:15 से 2:45	भोजन एवं विश्राम
11.		3:00 से 4.00	पंचम सत्र
12.		4:15 से 5.15	शाखा
13.		5:15	चाय
14.		6:00 से 7:00	षष्ठ सत्र
15.		7.15 से 8.00	संध्यावंदन
16.		8:00	भोजन
17.		9:00 से 10.00	अनौपचारिक कार्यक्रम
18.	रात्रि	10:15 बजे	रात्रि शयन एवं दीप विसर्जन

पाठ्यक्रम

नौ श्रेणियों का पाठयक्रम रहेगा।

1) षिक्षण विधियां
2) शिक्षा सिद्धान्त
3) षिक्षा मनोविज्ञान
4) कार्यालय अभिलेख
5) सतत् समग्र मूल्यांकन
6) विद्यालय संगठन
7) विषय शिक्षण
8) शिशु वाटिका
9) वैचारिक ध्येय चिंतन एवं प्रेरणा

1- षिक्षण विधियां

1. शिक्षण कला
2. अध्यापन के सिद्धान्त, सूत्र व युक्तियां
3. षैक्षिक तकनीकी –उददेष्य एवं कार्य,स्वरूप व सीमाएं
4. सूक्ष्म पाठ तन्त्र एवं कौषल विकास
   1.लेखन कौषल, 2.प्रस्तावना कौषल, 3.षिक्षण सहायक सामग्री उपयोग का कौषल, 4. प्रष्नोत्तर कौषल, 5.ष्यामपट्ट लेखन कौषल, 6.व्याख्यान देने का कौषल, 7.प्रदर्षन कौषल, 8.उदाहरण कौषल, 9.पाठ्य सामग्री क्रियाएं
5. पंचपदी आधारित षिक्षण पद्धति व पाठ योजना

2- शिक्षा सिद्धान्त

1. शिक्षा का अर्थ, कार्य एवं उद्देश्य
2. भारतीय शिक्षा दर्शन एवं उसके तत्व
3. भारतीय शिक्षा प्रवर्तक – स्वामी विवेकानंद, श्री अरविन्द, महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ टैगोर,श्री गुरूजी
4. पंचमुखी शिक्षा – शारीरिक, व्यवसायिक, मानसिक, नैतिक / आध्यात्मिक

3. शिक्षा मनोविज्ञान

1. बाल मनोविज्ञान,समस्याएं, बालक की सहज प्रवृतियां एवं निदान
2. शिक्षा मनोविज्ञान – अर्थ, स्वास्थ्य, उपयोगिता
3. वंशानुक्रम व वातावरण – परिवार, विद्यालय, समाज का योगदान
4. अधिगम (सीखना) के नियम एवं प्रभावी तत्व

4 कार्यालय अभिलेख

(1) 1. प्रवेश पत्र
   2. प्रवेश पत्र फाईल
   3. प्रवेश / त्याग पंजी
   4. छात्र उपस्थिति पंजी
   5. आचार्य उपस्थिति पंजी

(2) आय–व्यय लेखा – आर्थिक – पावती ;त्मबमपचजद्ध, दैनिक पंजी ;क्ंल इववाद्ध, रोकड़ बही ;बे ठववाद्धए खाता बही ;स्मकहमतद्ध, सरकारी फंड, रजिस्टर विभागशः

विशयषः

(1) पुस्तकालय वाचनालय

(2) 1. वस्तु भण्डार विक्रय
   2. वस्तु भण्डार स्थायी–अस्थायी पंजिका
   3. अवकाश पंजी
   4. निरीक्षण पंजी
   5. सेवा पत्रावली एवं सेवा पुस्तिका
   6. वार्षिक बजट
   7. समिति कार्यवाही पंजी
   8. कर्मचारी भविष्य निधि ;म्प्च्थ्ण्द्ध,

(3) स्टाक पंजी

5.सतत समग्र मूल्यांकन

(1) पाठयक्रम वैशिष्ठय, परीक्षण एवं मूल्यांकन, इकाई विभाजन, प्रश्न पत्र निर्माण, वस्तुनिष्ठ, लघु उत्तरीय, निबन्धात्मक

(2) संज्ञानात्मक ,सह संज्ञानात्मक तकनीकी व विधा

(3) छात्र प्रगति सूचना प्रपत्र व पंजिका

(4) क्रियाकलाप अनुसंधान
(5) परीक्षाफल लेखा व छात्र अभिलेख

6. विद्यालय संगठन (चर्चा)

1. आदर्श आचार्य की हमारी संकल्पना
2. शिशु सभा – स्वस्थ कार्य संचालन
3. शिशु भारती/छात्र संसद एवं विभाग
4. अभिभावक प्रशिक्षण क्यों और कैसे :– अध्यापक–अभिभावक कार्यक्रमों के आयोजन, अभिभावक दिवस, मातृ दिवस, अभिभावकों की पाठशाला में सक्रिय सहभागिता, मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, विद्यालय पंचांग का नियमित मूल्यांकन।
5. हमारे विद्यालयों की अपनी पहचान :– संस्कार प्रधान शिक्षा, भारतीय मूल्यों / राष्ट्रीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा, स्वाबलम्बी शिक्षा, चरित्र एवं व्यक्तित्व प्रधान शिक्षा, विद्यालयों का संस्कारित एवं आध्यात्मिक वातावरण, देश भक्त, कर्मठ एवं निष्ठावान बालकों का निर्माण।
6. स्वदेशी जागरण
7. विद्यालय भवन एवं परिसर, सहपाठ क्रियाएं एवं उनका महत्व
8. अभिभावक सम्पर्क एवं गोष्ठियां
9. सात अनिवार्य कार्यक्रम– 1.वार्षिकोत्सव, 2.अभिभावक सम्मेलन, 3.मातृ सम्मेलन, 4.वर्ष प्रतिपदा/पथ संचलन,
   5.विद्यालय खेल दिवस, 6.समर्पण निधि कार्यक्रम, 7.भारतमाता पूजन कार्यक्रम
10. विद्यालय प्रबन्ध समिति गठन, भूमिका, कार्य एवं सामंजस्य
11. खेलकूद कुषलता को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक पहलू
12. स्वास्थ्य षिक्षा के सिद्धान्त तथा महत्व
13. 10 करणीय बिन्दु एवं दैनिक जीवन में उनका महत्व

व्यवस्था कौशल

1. स्वप्रशासन
2. स्वमेव मृगेन्द्रता
3. आदर्श व्यवस्था – समयबद्धता, कर्मठता, अनुशासनबद्धता, शीघ्र निर्णय, व्यवहार मधुरता, कौशलात्मक योग्यता, निर्णय पालना में तटस्थतम, प्रेरणास्रोत, परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता, परिपक्वता, नेतृत्व, उचित एवं सर्वोतम उपयोग की क्षमता, प्रत्येक कार्य में संगठन हित सर्वोपरि, विषय पारगंतता, सहयोग प्राप्त करने की क्षमता।
4. वित्तीय साधनों की व्यवस्थतता – साधन जुटाना, साधनों का सदुपयोग, खातों एवं आवश्यक लेखा का रखरखाव, व्यय में पारदर्शिता, वितीय नियमों की जानकारी एवं पालन।
5. सामाजिक व्यवस्था – समान व्यवहार, सामाजिक सहयोग, प्रजातांत्रिक व्यवस्था, विद्यालय के क्रियाकलापों में विद्यार्थियों की अधिक सहभागिता, समाज का विश्वास अर्जित करना।

<u>कौशल प्रयोगशाला (कक्षा शिक्षण)</u>

1. आदर्श पाठों के अतिरिक्त 7 पाठ तीन विषयों से प्रत्येक को पढ़ाने होंगे। दो अनिवार्य विषय एवं एक इच्छित विषय होगा। शिशु वाटिका की आचार्य / दीदी को भी 7 पाठ प्रयोगात्मक पढ़ाने होंगे।
2. अतिरिक्त समय में निम्न कौशलों के विकास हेतु विविध कार्यक्रम व प्रतियोगिताएं आयोजित की जा सकती हैं।
   श्यामपट्ट लेखन, श्रुतलेख, सुलेख, साहित्य संकलन, वाद विवाद प्रतियोगिता, लेख प्रतियोगिता, कथा कथन, प्रश्नोत्तर।

<u>व्यवहारात्मक आचरण</u>

1. स्वच्छता, सुव्यवस्था सज्जा
2. वेश, समय की पालना, अनुशासन, शिष्टाचार, व्यवहार
3. कार्य की प्रेरणा
4. सहयोग व परिवार भाव

5. वाणी की मधुरता, शब्द संयम व चयन
6. श्रमनिष्ठा, ध्येयनिष्ठा
7. स्वाध्याय, लेखन
8. टयूशन, संकलन, साहित्य संग्रह
9. आचार्य–कार्य प्रेरणा, कार्य की दिशा
10. अनुशासन भाव
11. एकात्मता स्तोत्र एवं मंत्र परिचय
12. विद्यालय की वंदना, उसका स्थान, स्वर, व्यवस्था
13. प्रामाणिकता एवं मिश्नरी भाव प्रतिबद्धता

7-विषय शिक्षण

क. हिन्दी

1. हिन्दी शिक्षण का महत्व व उद्देश्य
2. शिक्षण विधियां
3. उच्चारण दोष व सुधार, श्रुत लेख
4. बर्तनी के दोष व सुधार, सुलेख
5. व्याकरण शिक्षण
6. गद्य–पद्य पाठन– तीन वाचनों का प्रयोग 1. आदर्ष वाचन, 2. अनुकरण वाचन, 3. मौन वाचन
7. निबन्ध व पत्र लेखन
8. पाठयोजना (पंचपदी)

ख. English

Developing Language skills – Listening, Speaking, Reading and Writing.

1. Objectives and Methodology

2. Features of English Pronunciation (Drill – Through commonly used words)

3. Phonetic Symbols

4. Stream of Speech

4.1 Stress
4.2 Rhythm
4.3 Juncture
4.4 Intonation

5.1 Listening:

i) Audio-Visual Aids
ii) Speaking Contrasting sounds(such as / p /and / b / t / and / d /
iii) To produce sounds and learners (in group or individually) are asked to reproduce those sounds.

5.2 Speaking:

Involvement of learner in activities in which they use spoken form such as in Drama, Poetry Recitation, Story telling, Role playing.

5.3 Reading:

i) Introduction:- Asking introductory questions to see that the learners have the required base for learning.
ii) Model Reading: Reading passage with proper pronunciation, stress, intonation, rhythm and pause.
iii) Loud reading: Inviting learner one by one to read aloud.
iv) Suggesting interesting books for library study.

5.4 Writing:

Handwriting: i) It involves manual skill
ii) The skill of controlling small muscles of the fingers
iii) Co-ordination of Hand and Eye.

Sufficient Practice drill during workshop. Pattern to be followed:

i) Curve Letters a,b,c,d,e,g,q,o
ii) Straight Letters with a loop h,i,j,k,lp,t,f
iii) Straight Letters upstrokes and down strokes m,n,v,u,w
All letters and strokes should be properly formed

Creative Writing: Writing sentences on given topic with ंबबनतंबल ंदक वतपहपदंसपजलण

6ण पाठयोजना (पंचपदी)

ग. संस्कृत

1. संस्कृत शिक्षण का महत्व व उद्देश्य
2. शिक्षण विधियां
3. उच्चारण दोष व सुधार
4. वर्तनी के दोष व सुधार
5. सुलेख
6. व्याकरण शिक्षण
7. गद्य–पद्य पाठन– तीन वाचनों का प्रयोग 1. आदर्ष वाचन, 2. अनुकरण वाचन, 3. मौन वाचन
8. निबन्ध
9. सम्भाषण विधि
10. पाठयोजना (पंचपदी)

घ. इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र व अर्थशास्त्र शिक्षण

1. इतिहास शिक्षण का महत्व व विषय वस्तु
2. इतिहास शिक्षण की विधियां व कठिनाईयां
3. भूगोल विषय शिक्षण का महत्व, विषय वस्तु एवं शिक्षण विधियां व कठिनाईयां
4. नागरिक शास्त्र शिक्षण का महत्व, विषय वस्तु, नागरिक शास्त्र शिक्षण विधियां व कठिनाईयां
5. सहायक सामग्री का निर्माण एवं प्रयोग
6. आपदा प्रबन्धन एवं परियोजना का निर्माण
7. पाठयोजना (पंचपदी)

ड. विज्ञान शिक्षण

1. विज्ञान शिक्षण का महत्व एवं विषय वस्तु
2. विज्ञान शिक्षण की विधियां
3. विज्ञान शिक्षण अधिगम सामग्री व प्रयोगषाला
4. घरेलू जीवन में विज्ञान का प्रयोग,
5. बालकों में वैज्ञानिक दृश्टिकोण का विकास
6. विज्ञान शिक्षण में प्रयोगात्मक कार्य
7. बालक वैज्ञानिक की खोज
8. पाठयोजना (पंचपदी)
9. विभिन्न स्तरों –
   क) पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक एवं ऊपर की कक्षाओं में शिक्षण विधियां
   ख) उपयोगिता एवं प्रयोग – समस्या एवं निराकरण

च. गणित शिक्षण

1. शिक्षण विधियां
2. षिक्षण अधिगम सामग्री
3. गणित प्रयोगशाला
4. समस्या निराकरण
5. दैनिक जीवन में गणित की उपयोगिता
6. पाठयोजना (पंचपदी)

छ. वैदिक गणित शिक्षण

1. वैदिक गणित व अंकों का परिचय, बीजांक ज्ञात करना
2. योग– सूत्र एकाधिकेन पूर्वेण, तथा बीजांक से उतर की जांच करना।
   घटाना– सूत्र एकाधिकेन पूर्वण एवं परममित्र अंक विधि की सहायता से घटाना तथा बीजांक से उतर की जांच करना।
3. बड़े अंकों को छोटे अंकों में (विनकुलम् अंक) बदलना तथा विनकुलम् से साधारण संख्या प्राप्त करना।
4. पहाड़े तथा मिश्रित गणनाएं।
5. गुणा 1. सूत्र एकन्यूनेनपूर्वेण
   2. एकाधिकेनपूर्वेण
6. गुणासूत्र 1. निखिलम्
   2. उध्वतिर्येग्भ्याम्

ज. योग शिक्षण

1. योग का अर्थ एवं महत्व
2. अष्टांग योग –
   क) यम : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह
   ख) नियम : शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्राणीधान
   ग) आसन
   घ) प्राणायाम
   ङ) प्रत्याहार
   च) धारणा
   छ) ध्यान : त्राटक (दीपक की लौ, भू–मध्य, नासिकाग्र)
   ज) समाधि
3. पंचकोष – अन्नमय कोष, मनोमय कोष, प्राणमय कोष, विज्ञानमय कोष, आनन्दमय कोष
4. विद्या भारती योग पाठयक्रम के अनुसार आसन, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार का अभ्यास मंत्र सहित
5. अ) प्राथमिक (शिशु कक्षा से पंचम कक्षा तक) :– खड़े आसन (ताड़ासन, पादहस्तासन, पार्श्वकोणासन), बैठे आसन (वज्रासन, सिंहासन, ऊष्ट्रासन, पद्मासन, जानुशिरासन, वीरासन, गोमुखासन, भद्रासन) लेटे आसन – पेट के बल – (भुजंगासन, मकरासन, धनुरासन), लेटे आसन – पीठ के बल – (शवासन, उत्तानपादासन, नावासन)
   आ) माध्यमिक (कक्षा षष्ठ से कक्षा अष्टम् तक) :– आसन – खड़े आसन (चक्रासन, त्रिकोणासन, पार्श्वकोणासन, परिवृत्तत्रिकोणासन, गरूड़ासन, योगमुद्रासन, बद्धपद्मासन, पश्चिमोतानासन, मत्स्यासन, उत्थित पदमासन, तोलासन,) लेटे आसन – पीठ के बल – (पवनमुक्तासन, उत्तानासन, हलासन, विपरीत कर्णी) लेटे आसन – पेट के बल – (शलभासन, नौकासन)
   इ) उच्च (कक्षा नवम् से कक्षा द्वादश तक) :– खडे आसन (पादहस्तअंगुष्ठासन, परिवृत्तपार्श्वकोणासन), बैठे आसन – (सिद्धासन, बद्धकोणासन, हंसासन, मयूरासन, कुक्कुटासन, गर्भासन, पदम मयूरासन, सुप्त वज्रासन), लेटे आसन–पीठ के बल –(सर्वांगासन, चक्रासन, उत्कटासन, कोणासन, ध्रुवासन, वक्रासन)
   ई) प्राणायाम :– – भस्त्रिका
   – कपालभाति
   – केवलीबन्द
   – अनुलोम विलोग
   – उज्जायी
   – भ्रामरी
   – प्रवण

   पाठयोजन (पंचपदी)

झ. शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद

सामान्य : सभी के लिए

1. षारीरिक षिक्षा का भाव,उसके लक्ष्य, उददेष्य एवं महत्व
2. षारीरिक षिक्षा के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी (भारतीय खेल संस्कृति)

3. षारीरिक सुयोग्यता एवं षारीरिक स्वस्थतता (चैलेपबंस थ्पजदमे ंदक चैलेपबंस ूमससदमे) को प्रभावित करने वाले तत्व
4. दो भारतीय खेलें (कबड्डी, खो–खो) कौषल एवं खेल नियमों की जानकारी।
5. एथलेटिक (ज्तंबा ंदक थ्पमसक) की संक्षिप्त जानकारी

केवल षारीरिक षिक्षकों के लिए

1. षारीरिक षिक्षा में प्रषिक्षण विधियां
   1. Warming up
   2. Conditional Training
   3. Circuit Training
   4. Interval Training
2. दो नई अन्तर्राश्ट्रीय खेलें थ्रोबाल एवं डॉज बाल (जीतवू ठंसस ंदक क्वकहम ठंसस) के कौषल एवं खेल नियमों की जानकारी
3. एथलेटिक्स में 200 तथा 400 मी. ट्रैक का रेखांकन (स्ंल वनज)

<u>शारीरिक</u>

1. 10 मिनट का व्यायाम–

क्र0	मिनट–सेकण्ड	कुल समय	क्रिया	प्रभाव
1.	1–30 मिनट	1–30 मिनट	किसी एक स्थान पर खड़े–खड़े जागिंग दौड,मध्यम दौड़, तेजगति दौड़	पल्स रेट का एक मिनट में 150–180 होना
2.	00–30 मिनट	2–00 मिनट	तीन बार प्राणायाम	रिलैक्सेषन पी.आर. एक मिनट में 120 सीने का फैलाव, रक्त से अषुद्धियों का दूर होना
3.	1–00 मिनट	3–00 मिनट	पूर्ण शरीर के व्यायाम डवइपसपजल म्गबमतबपेमे	मांसपेषी एवं जोड़ों का खुलना
4.	00–30 मिनट	3–30 मिनट	पुनः 3 प्राणायाम	रिलैक्सेषन
5.	1–00	4–30 मिनट	तालबद्ध व्यायाम कूद के कोई भी व्यायाम मध्य से तीव्र गति	नाड़ी मांसपेषी तालमेल
6.	00–30	5–00 मिनट	पुनः 3 प्राणायाम	रिलैक्सेषन
7.	1–00	6–00 मिनट	षक्तिवर्धक व्यायाम हाथों का दबाब, आधी बैठकें, आधे दंड आदि	षक्तिवर्धन ;ैजतमदहजीद्ध
8.	00–30	6–30 मिनट	षारीरिक (कंपन), झटकना ;टपइतंजपपवद ैींपदहद्ध	रिलैक्सेषन
9.	1–00	7–30 मिनट	लचक एवं खिंचाव के व्यायाम ऊपर–नीचे बाजू या टांगों द्वारा	लचक, कद का बढ़ना, मुड़ना, निर्माण होना।
10.	00–30	8–00 मिनट	षरीर हिलाना झटकना,कम्पन करना	रिलैक्सेषन
11.	1–00	9–00 मिनट	मध्यम एवं अति तीव्र गति से दौड़ना (अपने स्थान पर)	गति बढ़ेगी
12.	00–30	9–30 मिनट	खुला ष्वास लेना नाक एवं मुख द्वारा	सांस लेने योग्य स्थिति में आना
13.	00–30	10–00 मिनट	3 बार प्राणायाम	रिलैक्सेषन
	ब्रह्मध्वनि	आंख बंद करके 3 बार वायुयान की ध्वनि से रक्त मुख पर लाना बाद में हाथों से सिर की मालिष		

2. समता, दक्ष, आरम्, एकशः सम्पत,

3. एक तति, द्वितति, त्रितति, चतुशः तति, पुरस्सर, प्रतिसर, वामसर, दक्षिणसर, वर्तन (वाम, दक्षिण, अर्धवृत)
4. मितकाल, मितकाल में वर्तन संचलन का अभ्यास, संचलन में वर्तन, क्षिप्रचल, स्तभ्
5. विभिन्न प्रतियोगिताओं का कौशल, खेल के मौदान की जानकारी
6. नियुद्ध, जूडो, घोष, पिरामिड, अग्निचक्र
7. व्यायाम योग, दण्ड योग, डम्बल योग, योग चाप, पताका योग
8. पाठयोजना (पंचपदी)

ञ. संगीत शिक्षण

1. वन्दना का अभ्यास
2. पाठयक्रम में निर्धारित गीतों का अभ्यास
1. ताल, स्वर, लय
2. संगीत की परिभाशा, सप्तक की परिभाशा, अलंकार का आरोह–अवरोह
3. वन्देमातरम्
4. राष्ट्रगान
5. प्रातः स्मरण, एकात्मता स्त्रोत, एकात्मता मंत्र अर्थ सहित।
6. पाठ योजना (पंचपदी)

प. शाखा

1. शारीरिक
2. आचार पद्धति, संघ प्रार्थना एवं अर्थ, चर्चा के विषय – संघ की पृष्ठभूमि एवं परिचय, रा0स्व0संघ शब्द का भावार्थ।
3. दैनन्दिन शाखा का महत्व
4. शाखा के अन्य कार्यक्रमों का महत्व
5. भगवा ध्वज
6. संघ के 6 उत्सव
7. गट एवं गण पद्धति
8. अच्छे स्वयंसेवक / कार्यकर्ता के गुण व अपेक्षा
9. शाखा में खेलों का महत्व

खेल – मण्डल, दो दलों, स्पर्श, युद्ध, बड़े मैदान के खेल साधनों के द्वारा खेलें। विभिन्न दौड़ें –एक टांग की दौड़, तीन टांग की दौड़, उल्टी दौड़, भालू दौड़, हार्थी दौड़, मुर्गा दौड़, घुड़सवार दौड़, रथ दौड़, ठोला दौड़, गणित दौड़, तीन टांग प्रकार (2), बिच्छू दौड़, बोरा दौड़, ।

स्पर्श के खेल – विष–अमृत, संगठन की जंजीर, गणेश छू, अंग छू, भस्मासुर, पद्मासुर, चरण स्पर्श, सांप नेवला, चूहा बिल्ली, तू शिवाजी, स्वर्गलोक की यात्रा, नीर–तीर, मखनी गाय, बिगड़ा बैल, जय हनुमान, अंधी दौड़, संतुलन बनाना, अंक छू, जंजीर बनाना।

दो दलों के खेल – शक्ति परिचय (1,2,3), टैंक युद्ध, दीवार युद्ध, कद्दू तोड़, रेलगाड़ी, डायनासोर, लंगड़ों की बारात, उड़ती मछली, गुरू चेला, मुल पार करना, संख्या बनाना, उल्टी संख्या बनाना, रूमाल झपट, कबड्डी, राम–राजा–रावण, कैदी बनाना, डमरू दौड़।

मण्डल स्पर्श– खड़ी खो, भगवा, वन्देमातरम्, शतरंज के मोहरे, सुदर्शन चक्र, घर बचाओ, नमस्ते जी, चूहा बिल्ली, नकलची बन्दर, चन्दन, चुनौती, कुरू–मूर्ति, आग लगी है आ रहे हैं, संख्या बनाना, अंगारा, करंट, बगुला भगत, मेंढक छू, लंगड़ी कबड्डी।

मण्डल में द्वन्द – शेर बकरी (1,2) ग्रीवा युद्ध, कुक्कुट युद्ध, स्कन्ध युद्ध, भालू युद्ध, अग्नि कुण्ड, दुर्ग विजय।

बैठे खेल – खायेंगे, फुर्र, ऐसा करो–वैसा करो, काला सफेद, धरती–आकाश–पाताल, प्राणी विज्ञान, सीता–राम, महापुरूषों की श्रृंखला, नेता की खोज, शक्ति परिचय, कठिन शब्द, डाकघर, विश्व–दर्शन, सूचना, संख्या बदल, शब्दभेदी बम, सूर्य नमस्कार स्थिति, अधूरा वाक्य, विलोम शब्द, जोड़ीदार शब्द, राजधानी, नाक–कान का सम्मेलन, मुफत की आज्ञा, हंसी बंद, संकेतांक, ओऊम्

Q- Syllabus of Computer :-

1. **Introduction and Functioning of Computer**

Definition of Computer, Computer System, Input Devices, Output devices, Characteristics, Limitations, Application areas of Computer. Functional component of Computer, Input Unit, CPU, Output Unit, Memory, Types of Memory.

2. **Computer Software**
Software, Types of Software, System Software – Operating System, Language processor, Application Software – Packages, Utilities, Customize Software. Features of Word Processor, Getting started with Word Processor,

3. **Windows Basic and MS Word**
Desktop, Start button, Icons, Dialog Window, Creating, Deleting Folder in Desktop, My Computer, Disk Drives etc. Main document window in MS Word, Creating, Saving, Closing, Opening,

4. **Printing and Editing Document in MS Word**
Printing document. Text Selection, Cut, Copy, Paste text, Moving, Copying and Deleting selected text, Spell check, Find and Replace.

5. **Excel**
Introduction to Excel, Database, Creating, Saving, Opening, Closing Worksheet, Use of formula in Worksheet.

6. **Internet**
Introduction to internet, Uses of Internet, Networking, Types of Network, Web page, Web Browser, Home page, Internet Site Address, Connecting to Internet, Creating E-main Account, Sending and Receiving E-mails.

ब. अनौपचारिक कार्यक्रम / अन्य आनन्दात्मक कार्यक्रम

1. व्यवस्था वितरण
2. भजन
3. देश भक्ति एकल गीत
4. लोक नृत्य
5. भजन नृत्य
6. समूहगान
7. हास्य नाटक
8. लोक नृत्य
9. कथा / प्रेरक प्रसंग
10. देश भक्ति नाटक
11. कविता पाठ
12. शिशु वाटिका गीत
13. त्वरित भाषण
14. वर्ग अनुभव
15. विनोद प्रसंग (चुटकुला)
16. प्रश्न मंच
17 अन्ताक्षरी
18 सी.डी. द्वारा (प्रोजेक्टर माध्यम से)

8.शिशु वाटिका शिक्षण

क) सैद्धान्तिक पक्ष :–

1. शिशु वाटिका की भूमिका एवं षिषु षिक्षा की विभिन्न पद्धतियां
2. षिषु वाटिका शैक्षिक व्यवस्थाएं
3. शिशुवाटिका वाटिका पाठ्यक्रम
4. शिशुवाटिका के कार्यक्रम
5. शिशु वाटिका की साज–सज्जा एवं वातावरण
6. षिषुवाटिका की दीदी
7. षिषु संस्कार प्रक्रिया
8. षिषुओं की अवांछनीय आदतें व निवारण
9. षिषु का आहर–विहार
10. समयसारिणी व पाठयोजन (पंचपदी आधार पर)

ख) व्यवहारिक पक्ष :–

1. शिशुओं के क्रियाकलाप– विज्ञान व बौद्धिक, षारीरिक विकास के
2. क्रियाकलाप आधारित विभिन्न फाईलें (चित्र पोथी)
3. अंक ज्ञान, भाशा ज्ञान के अभिनय गीत
4. कहानी सुनाने के माध्यम एवं विधि
5. मैदान में सन्तुलन, षारीरिक क्षमता, बौद्धिक विकास आदि के कुछ खेल

9. वैचारिक (ध्येय चिन्तन)

1. **हमारा लक्ष्य :** विद्या भारती द्वारा निर्धारित राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली, युवा पीढ़ी का निर्माण, हिन्दुत्वनिष्ठ, देशभक्ति, अनुशासनबद्धता, व्यक्तित्व विकास, मानव मूल्य, वर्तमान चुनौतियां, नर सेवा नारायण सेवा, सर्व धर्म समन्वय
2. **भारत की ऋषि परम्परा** : गुरू विश्वामित्र, संदीपनी आश्रम, गुरू रामदास, स्व0 श्रद्धानंद, महर्षि अरविन्द, स्वामी विवेकानंद, महर्षि रमण (शिक्षा, आश्रम से सम्बन्धित)
3. **योगः कर्मसु कौशलम् :** स्वरूप, मर्यादा, ध्यान, मौन, साधना आदि।
4. **राष्ट्र निर्माण/जागरण में मातृशक्ति का योगदान :** माता जीजाबाई, लक्ष्मीबाई, निवेदिता, दुर्गावती, रानी झांसी, अहिल्याबाई आदि मातृ शक्ति के रूप में मात्भक्ति भावना उत्पन्न करने हेतु।
5. **हमारा प्रेरणास्रोत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** – संक्षिप्त इतिहास, राष्ट्रीय चेतना, युवा दिशाबोध, हिन्दु राष्ट्र संगठन, संघर्षमय जीवन।
6. **जीवन मूल्य :** मानव मूल्य आधारित शिक्षा – राष्ट्रीय, सामाजिक वयक्तित्व
7. **आचार्यत्व एक व्रत व्यवसाय नहीं** : महात्मा गांधी, डा0 राधाकृष्ण, महामना मदन मोहन मालवीय, स्वामी रामतीर्थ, डा0 हेडगेवार, रविन्द्रनाथ टैगोर संक्षिप्त परिचय, देन एवं कृतियां।
8. **विद्यालय एवं परिवारों में संस्कारक्षम वातावरण :** आदर्श आचार्य और उनका जीवन, परिवारों–शिष्यों से सम्पर्क, संस्कारित सज्जा, अभिभावक/मातृ सम्मेलन, पर्व, उत्सव, सद्साहित्य, परिवारों में हिन्दु जीवन पद्धति पर बल आदि।

पाठशाला प्रबन्ध एवं प्रशासन, प्रधानाचार्य, आचार्य प्रशिक्षण, आचार्य विकास, विद्यालय में सह पाठय क्रियाएं, स्वमूल्यांकन, सहयोग एवं पारस्परिक मैत्री, आध्यात्मिक क्रियाओं गतिविधियों का संचालन।

9. **समाज में भारतीयता का प्रसार एवं प्रचार :–** राष्ट्रीय भावनात्मक एकता, स्वदेशी जागरण, चिंतन,स्वाबलम्बी भारतीय जीवन, आध्यात्मिक बोध, आत्मोकर्ष एवं आत्म संतोष, भारतीय चिकित्सा पद्धति, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, भारतीय ललित कलाएं एवं संगीत आदि।
10. **विद्यालय सामाजिक चेतना का केन्द्र बने :–** सामाजोचित शिक्षा, बाल केन्द्रित शिक्षा, विद्यालय में समाज की सहभागिता, सामाजिक कार्यक्रमों का विद्यालय में आयोजन, विद्यालयों का सामाजिक प्रबन्ध एवं प्रशासन, विद्यालयों द्वारा सामाजिक संस्कार / चेतना, परिवारों में सद्साहित्य, प्राचार्य, आचार्य का अनुकरणीय व्यक्तित्व।
11. **उपेक्षित क्षेत्रों की चुनौती :–** जनजातीय शिक्षा, दलित वर्ग को शिक्षा, व्यवसाय प्रधान शिक्षा, कुरीतियों, धर्मांधता, अंधविश्वास उन्मूलन कार्यक्रम, भावी आर्थिक जीवन के प्रति विश्वास एवं आस्था, जीवन संस्कार केन्द्र।
12. क्रा**न्तिकारी परम्परा :–** सामाजिक परिवर्तन, स्वदेश प्रेम, भारतीय मनोवैज्ञानिक आधार, शिक्षा का भारतीयकरण, आत्मसम्मान का भाव, शिक्षा का समाजीकरण, शिक्षा का आध्यात्मीकरण, व्यवसायोन्मुख शिक्षा, स्वाबलम्बन की भावना।
13. **बालक के र्स्वागीण विकास की हमारी संकल्पना :–** हिन्दुत्व बोध, भारतीय जीवन दर्शन, भारतीय सभ्यता, संस्कृति के प्रति आस्था, व्यक्तित्व निर्माण योगाभ्यास, शारीरिक गठन, धार्मिक एवं आध्यात्मिक बोध, देशभक्त एवं आदर्श नागरिक (पंचमुखी विकास)
14. ज्ञान व विज्ञान में भारत की विश्व को देन (भारतीय वैज्ञानिक)
15. इतिहास का विकृतिकरण।
16. वर्तमान चुनौतियां।
17. भारतीय संस्कृति की विशेषताएं।

18. लक्ष्य एक कार्य अनेक (संघ प्रेरित विविध संगठन)
19. पुण्यभूमि भारत
20. सामाजिक समरसता
21. पर्यावरण
22. बालिका शिक्षा
23. भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान
24. घरेलू नुस्खे उपचार व समाधान
25. समसामयिक परिस्थितियों में हमारी भूमिका
26. प्राकृतिक आपदा
27. पारिवारिक सामंजस्य कैसे बनायें

ewY;k

प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी के कार्य का मूल्यांकन निम्न बिन्दुओं पर किया जाएगा। उतीर्ण होने के लिए 40 प्रतिषत अंक प्राप्त करना अनिवार्य है :–

क्र0	विषय	अंक
1	अनुशासन एवं समय पालना	25
2	व्यवहार एवं व्यवस्था	25
3	लिखित कार्य	25
4	सामग्री निर्माण	50
5	कक्षा शिक्षण	75
6	लिखित परीक्षा	100
		300

✯ ✯ ✯ ✯ ✯

विद्या भारती की अभिनव पंचपदी षिक्षण पद्धति के आधार पर पाठयोजना का निर्माण

विद्या भारती की अभिनव पंचपदी षिक्षण पद्धति में बालक को केन्द्र–बिन्दु माना गया है। बालक षिक्षक की सहायता से एवं पाठ्य वस्तु के माध्यम से षिक्षण लक्ष्यों के अनुरूप अपना विकास करता है। इस पद्धति में पाठ्य विषय की ज्ञान की एक इकाई को लेकर षिक्षण किया जाता है जो एक से अधिक कालांष में उसी दिन अथवा दूसरे दिन उसी विषय के कालांष में पूर्ण होती है।

विद्या भारती की अभिनव पंचपदी षिक्षण पद्धति प्राचीन भारत की षिक्षण प्रणाली एवं आधुनिक युग की षिक्षण विधियों की अच्छी एवं उपयोगी बातों को लेकर विकसित की गई है। इस पद्धति में प्रत्येक कालांष में षिक्षण कार्य ब्रह्मनाद (ॐ की ध्वनि) एवं एक मिनट के ध्यान (मौन) से प्रारम्भ किया जाता है। यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध है कि एक कालांष में अध्ययन किये गये विषय के पष्चात् दूसरे विषय का षिक्षण आरम्भ करने से पूर्व मस्तिष्क को अवकाष एवं शान्ति की आवष्यकता है तभी छात्र द्वारा उस विषय का अर्जित ज्ञान उसकी स्मृति का अंग बन सकता है। एक मिनट के ध्यान एवं ॐकार की ध्वनि से मस्तिष्क शान्त एवं दूसरे विषय के अध्ययन हेतु तत्पर होता है।

इस पद्धति के पांच पद निम्नलिखित हैं :–

1. अधीति, 2. बोध, 3. अभ्यास, 4. प्रयोग, 5. प्रसार(स्वाध्याय एवं प्रवचन)

ये सीखने–सिखाने के मनोवैज्ञानिक क्रम हैं। इन पदों को सभी पाठ्य विषयों के षिक्षण हेतु कक्षाओं के छात्रों के लिए अपनाया जा सकता है।

1. अधीति

इस प्रथम पद में अध्यापक विषय वस्तु को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। अध्यापक नवीन विषय को छात्रों के पूर्व ज्ञान से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। छात्र अपने अध्यापक के सहयोग से इस प्रस्तुत विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करते हैं एवं उसका अध्ययन करते हैं। विषय की प्रकृति के अनुरूप पद्धति अपनाकर अर्थात् अध्यापक के कथन को श्रवण कर, प्रष्नोत्तर, वाचन, प्रयोग आदि के माध्यम से छात्र विषय–वस्तु से सम्बन्धित तथ्यों एवं सिद्वान्तों की जानकारी प्राप्त करते हैं।

2. **बोध**

इस द्वितीय चरण में छात्र विषय–वस्तु के मूल सिद्वान्त या तत्व को समझने का प्रयास करते हैं। मनन, पुनरावृति, प्रष्नोत्तर, कक्षा में स्वयं उसका पुनः अभ्यास करके अथवा प्रयोग करके बोध प्राप्त करते हैं। अध्यापक भी प्रष्न पूछ कर अथवा निरीक्षण के द्वारा यह जानने का प्रयास करते हैं कि छात्रों ने पाठ्य–वस्तु मूल तत्व को ग्रहण किया है अथवा नहीं, तथा आवष्यकता के अनुसार उनकी सहायता करते हैं।

3. **अभ्यास**

तृतीय चरण में छात्र अर्जित ज्ञान का अभ्यास करते हैं एवं उसमें परिपक्वता प्राप्त करते हैं। विभिन्न प्रकार से किये गये अभ्यास के द्वारा ही अर्जित ज्ञान चित में स्मृति–संस्कार के रूप में स्थायी बनता है। अध्यापक इसी दृष्टि से छात्रों को गृह–कार्य अथवा अभ्यास–कार्य देते हैं। छात्रों द्वारा किये हुए अभ्यास–कार्य का निरीक्षण अध्यापकों द्वारा किया जाना आवष्यक है जिससे छात्रों की त्रुटियों या भूलों में सुधार किया जा सके। अभ्यास–कार्य का रूप विविध, रूचिपूर्ण एवं पूर्व–नियोजित होना चाहिए। छात्रों को जब एक साथ अनेक विषयों का अभ्यास कार्य करना होता है तो वह उनके लिए भार बन जाता है तथा वे उसे निर्धारित अवधि में पूर्ण भी नहीं कर पाते। गृहकार्य पाठ्य–वस्तु के मूल तत्व को बार–बार तथा विभिन्न प्रकार से अभ्यास करने हेतु दिया जाता है। अतः इसमें विविधता आवष्यक है जिससे छात्रों में अभ्यास कार्य के प्रति रूचि बनी रहे। अभ्यास कार्य इस प्रकार का हो जिससे छात्रों में विभिन्न प्रकार की कुषलताओं का भी विकास हो सके।

4. **प्रयोग**

प्रत्येक ज्ञान जीवन में व्यवहार में लाने के उद्देष्य से ही अर्जित किया जाता है। अनुभवजन्य ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान होता है, अन्यथा वह केवल पुस्तकीय या शाब्दिक ज्ञान बनकर रह जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार ही इस चतुर्थ पद में प्रत्येक पाठ्य–वस्तु की ऐसी सहायक क्रिया छात्रों द्वारा की जाती है जिसमें उसके द्वारा अर्जित ज्ञान का प्रयोग किया जा सके। यह सहपाठ्य क्रिया विषयों की प्रकृति के अनुरूप अपनायी जाती है। भाषा एवं साहित्य के पाठ्य विषयों में अभिनय, अन्त्याक्षरी एवं वाद–विवाद प्रतियोगिता, इतिहास में प्राचीन स्थलों का अवलोकन, सिक्कों का संग्रह, सर्वेक्षण, मानचित्र–रेखाचित्रों का अंकन, नागरिक शास्त्र में छात्र–संसद, छात्र–मन्त्रिमण्डल आदि का विद्यालय में संचालन करना, विज्ञान में मॉडल, चार्ट आदि का निर्माण करना, गणित में कक्ष, क्रीड़ास्थल आदि का क्षेत्रफल ज्ञात करना इत्यादि सहपाठ्य क्रियाएं अर्जित ज्ञान को क्रियात्मक ;स्मंतदपदह इल कवपदहद्ध अर्थात् क्रिया–आधारित–षिक्षण ही इस चतुर्थ पद में निहित सिद्वान्त है।

5. **प्रसार**

विषय के अध्ययन, बोध अभ्यास एवं प्रयोग के द्वारा प्राप्त ज्ञान को आत्मसात कर उस ज्ञान का प्रसार अथवा विस्तार करता इस पद्धति का पंचम पद है। ज्ञान के प्रसार के लिए द्विविध प्रयास करना चाहिए– 1. स्वाध्याय 2. प्रवचन।

1. **स्वाध्याय** – 'स्वेन अधीयते इति स्वाध्यायम्' अर्थात् अपने द्वारा जो अध्ययन किया जाये, उसे ही स्वाध्याय कहते हैं। इस दृष्टि से इस पंचम पद में छात्रों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे नवीन अर्जित ज्ञान के विस्तार हेतु उसमें सम्बन्धित पुस्तकों का अध्ययन करें। अध्यापकों से अपेक्षा है कि वे इस सम्बन्ध में छात्रों

को सुझाव दें और उन्हें बताएं कि उनको सम्बन्धित विषय–सामग्री किस पुस्तक या पत्र पत्रिका में उपलब्ध हो सकेगी। विद्यालय के पुस्तकालय में इस प्रकार की पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं की व्यवस्था वांछनीय है। स्वाध्याय से छात्रों के अर्जित ज्ञान का विस्तार होता है तथा तुलनात्मक अध्ययन से पाठ्यविषय के सभी पक्ष स्पष्ट होते हैं। इससे छात्रों में ज्ञानार्जन हेतु आवष्यक अनुसंधान वृति का विकास भी होता है।

स्वाध्याय का अर्थ 'स्व' का अध्ययन भी है। इसका भावार्थ अर्जित ज्ञान का उपयोग 'स्व' अर्थात् आत्मा के विकास हेतु करना है। अध्यात्म की दृष्टि से तो वेदों के अथवा धर्मषास्त्रों के अध्ययन एवं उसके अर्थचिन्तन को ही स्वाध्याय कहते हैं। परन्तु यहां स्वाध्याय के द्वारा अर्जित ज्ञान का विस्तार,उस ज्ञान को अपने विकास के लिए लागू करना तथा उसका उपयोग अपने राष्ट्र एवं मानव–समाज की समस्याओं के समाधान में और उसके विकास में किस प्रकार किया जा सके, इसका अध्ययन एवं चिन्तन करना है।

2. **प्रवचन** – उपार्जित ज्ञान को प्रवचन के द्वारा दूसरों को वितरित करने से ज्ञान एवं विद्या में वृद्वि होती है। यह षास्त्रसम्मत एवं अनुभवजन्य सिद्धान्त है। साथ ही इससे स्वार्थपरता के स्थान पर परार्थपरता के उदात भाव का भी विकास होता है जो कि षिक्षा या ज्ञानार्जन का मूल उदेष्य है। जो ज्ञान मैंने प्राप्त किया है उसको मैं दूसरों को प्रदान कर उनको लाभान्वित करूं।

यह वृति विद्यार्थियों में जाग्रत करने की आवष्यकता है। आजकल विद्यार्थियों में स्वार्थवृत्ति एवं प्रतिस्पर्धा की भावना व्याप्त है। ज्ञान में मुझसे कोई दूसरा आगे न निकल जाय, मैं ही परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करूं,यह सामान्य वृत्ति पायी जाती है। इससे स्वार्थपरता, अहंकार एवं असामाजिकता विद्यार्थियों में पनपती है जो जीवन के विकास में बाधक है।

अतः विद्या मन्दिरों में इस प्रकार की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों को अपने पिछड़े साथियों को पढ़ाने वाले छात्र का ज्ञान परिपक्व होगा और पिछड़े छात्रों को उनके बराबर आने का अवसर मिलेगा। प्राचीन भारत में यह पद्वति प्रचलित थी।

इस प्रकार सरस्वती विद्या मन्दिरों में अधीति, बोध, अभ्यास, प्रयोग एवं प्रसार– इन पांच पदों के माध्यम से छात्र सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। पंचपदी षिक्षण–पद्वति से छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान अनुभवजन्य, सम्पूर्ण एवं स्थायी होता है।

वैचारिक (ध्येय चिन्तन)

1. हमारा लक्ष्य
2. भारत की ऋषि परम्परा
3. योगः कर्मसु कौशलम्
4. राष्ट्र निर्माण/जागरण में मातृशक्ति का योगदान
5. हमारा प्रेरणास्रोत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
6. जीवन मूल्य
7. आचार्यत्व एक व्रत व्यवसाय नहीं
8. विद्यालय एवं परिवारों में संस्कारक्षम वातावरण
9. समाज में भारतीयता का प्रसार एवं प्रचार

10. विद्यालय सामाजिक चेतना का केन्द्र बने
11. उपेक्षित क्षेत्रों की चुनौती
12. क्रान्तिकारी परम्परा
13. बालक के सर्वांगीण विकास की हमारी संकल्पना
14. ज्ञान व विज्ञान में भारत की विश्व को देन (भारतीय वैज्ञानिक)
15. इतिहास का विकृतिकरण।
16. वर्तमान चुनौतियां।
17. भारतीय संस्कृति की विशेषताएं।
18. लक्ष्य एक कार्य अनेक (संघ प्रेरित विविध संगठन)
19. पुण्यभूमि भारत
20. सामाजिक समरसता
21. पर्यावरण
22. बालिका शिक्षा
23. भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान
24. घरेलू नुस्खे उपचार व समाधान
25. समसामयिक परिस्थितियों में हमारी भूमिका
26. प्राकृतिक आपदा
27. पारिवारिक सामंजस्य कैसे बनायें